राजनीति की हलचलों से भरा सावन

RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 9 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 3 अगस्त 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

दिल्ली में प्रदर्शन और लाठीचार्ज के बाद देशभर में चल रही उठापटक पर चिन्ता-चिन्तन, उत्तराखण्ड से भी अपील

कांग्रेस सहित विपक्ष मुद्दा बनाकर कूद पड़ा है जबकि भाजपा अपने मिशन पर अडिग, सीएम धामी के तोलबोल

कार्यालय प्रतिनिधि

दिल्ली के जन्तर-मन्तर पर सोनम वांगचुक की भूख हड़ताल, उन्हें जबरन हिरासत में लेने, सरकार के खिलाफ जबर्दस्त वरोध प्रदर्शन असर उत्तराखण्ड में भी है। ज्वलन्त मुद्दों के आलवा इस प्रदेश में राजनीति की हलचलों से भरा है यह सावन। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का युवाओं के समर्थन में उतरने पर उन्हें जिस प्रकार पुलिस द्वारा उठाया गया, उसे लेकर कांग्रेसी देश भर में उबाल दिखा रहे हैं। अन्य पार्टियां अपने तरीके से विरोध प्रदर्शन पर उतर आई हैं। जबकि भाजपा की डबल इन्जन सरकार अपनी रीति-नीति को प्रचारित कर रही है।

इस घटनाक्रम में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान को इस्तीफा देना पड़ा। इसके बाद सोशल मीडिया पर चारों ओर जश्न दिखाई दिया लेकिन राजनीति का सावन क्या करेगा पता नहीं है। जबकि सावन में राजनीति एकदम हरी है।

देशभर में चल रहे पक्ष-विपक्ष का उत्तराखण्डी रूप देखें तो यहाँ कांग्रेस सहित विपक्ष मुद्दा बनाकर कूद पड़ा है जबकि भाजपा अपने मिशन पर याने 'मोदी' रटन्त पर अडिग है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के तोलबोल हो चुके हैं। सीएम धामी का बड़ा बयान यही है कि दिल्ली में चल रहे विरोध प्रदर्शनों में छात्रों की आड़ में राजनीति हो रही है। उन्होंने कहा कि यह विरोध केवल छात्रों की चिन्ता तक सीमित नहीं रह गया है बल्कि इसके पीछे एक सुनियोजित राजनीतिक रणनीति दिखाई देती है। कहा कि कुछ लोग छात्रों को राजनीतिक मोहरा बनाकर अपने हित साधने की कोशिश कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने प्रधान

शेष पृष्ठ 2 पर

लच्छू कोठारी के बेटे

मूर्खता के किसी कार्य के लिये लोग किसी व्यक्ति की तुलना आज लच्छू कोठारी के बेटों से करते हैं। लच्छू कोठारी स्वयं बड़ा बुद्धिमान व सम्पन्न किसान था परन्तु उसके बेटों की मूर्खता के कारण चाहे बाप के रूप में ही सही, अनायास ही लोगों की जवान में लच्छू कोठारी का नाम आ जाता है। लच्छू कोठारी का जन्म स्थान अभी तक ठीक तय नहीं हो पाया है। कुछ लोग उसे हिमाचल की काँगड़ा घाटी निवासी मानते हैं, कुछ लोग पौड़ी गढ़वाल का। अधि कांश लोगों का मत है कि वह पिथौरागढ़ के किसी स्थान का रहने वाला था।

लच्छू कोठारी के सात बेटे थे, सभी हृष्टपुष्ट, पर मूर्खता के मामले में उनका कोई सानी नहीं था। उनके दर्जनों किस्से आज भी घर-घर प्रचलित हैं। उनमें एक बात विशेष थी कि वह जहाँ भी जाते, सब भाई साथ जाते। घर के केवल एक व्यक्ति को किसी शुभ अवसर पर निमन्त्रण आता तो सातों भाई चल देते। एक बार किसी विवाह समारोह में सम्मिलित होने के लिये वह सात-आठ मील दूर स्थित दूसरे गाँव गये। विवाह समारोह में उन्होंने जो अजीब-अजीब हरकतें की वह तो की है, परन्तु जब घर को वापस आ रहे थे, तो रास्ते में रात हो गई। आगे का रास्ता बड़ी मुश्किल से दिखाई पड़ता था। सातों भाईयों ने एक स्थान पर बैठ कर यह निर्णय लिया कि कुछ भाई अपने घर जाकर मशाल लेकर आएंगे तभी सब लोग घर जायेंगे। तीन भाई 2-3 मील चलकर अपने घर पहुँचे, वहाँ से मशालें जलाई तथा उस स्थान पर गये जहाँ शेष चार भाई उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। तब सभी भाईयों ने मशाल की रोशनी में घर की ओर प्रस्थान किया तथा अपनी सूझबूझ के लिये स्वयं ही गर्व महसूस करने लगे। घर पहुँच कर ही उन्हें ध्यान आया कि जिस तरह तीन भाई बिना मशाल के मशाल लेने घर पहुँच गये थे, वैसे ही सब भाई घर पहुँच सकते थे। अत: सबने बैठ कर आपस में तय किया कि भविष्य में ऐसी नौबत आने पर सब लोग एक साथ ही घर आयेंगे।

एक बार सातों भाई लकड़ी काटने जंगल में गये। ईधन की लकड़ी बीन रहे थे। वहाँ कोई बाघ आ धकमा। बाघ देखते ही उनके छक्के छूट गये। जिसको जिधर को भागने का मौका मिला, उधर ही भाग लिया। इस भागा-भागी में सभी भाई घने जंगल में एक दूसरे से अलग हो गये। हर कोई यही सोचता रहा कि उसे छोड़ कर सब को बाघ खा गया है। अत: शाम को एक-एक करके सब घर पहुँचे। घर पहुँच कर सब आँगन में एक जगह बैठ गये। सबसे पहले बड़े भाई ने गिनती की। गिनती में 6 लोग ही निकले, जबकि उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि वह 6 नहीं बल्कि 7 भाई हैं। अत: चिन्ता व्याप्त हो गई कि एक भाई बाघ का ग्रास बन गया। फिर भी तथ्य की पुष्टि उन्होंने अच्छी तरह कर लेनी चाही कि क्या वास्तव में एक भाई कम लौटा है? अत: बारी-बारी से सभी भाईयों ने गिनती की। हर बार एक कम निकला। बस क्या था, उन्होंने रोना धोना शुरू कर दिया। भाई के वियोग में सभी लोग दहाड़े मार कर रोने लगे। घर में शोक छा गया। आसपास के सभी लोग दौड़े आए, रोने धोने का कारण मालूम किया। एक वृद्ध व्यक्ति प्र प्रस्ताव किया कि सब लोग एक कतार में बैठ जाएं ताकि फिर से गिनती की जा सके। सब लोग एक

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

युवा सिर्फ दर्शक नहीं रहना चाहते

किसी भी जन आन्दोलन की सबसे बड़ी पूंजी उसकी नैतिक विश्वसनीयता होती है। ऐसे आन्दोलनों का उद्देश्य बयान देना, नेता बनना नहीं बल्कि एक विचार को प्रवाहित करना होता है। फिर लोकतन्त्र में तो सत्ता से सम्वाद अधिकार है। सोनम वांगचुक का शिक्षा व्यवस्था को लेकर चलाया गया अभियान जिस प्रकार का आन्दोलन खड़ा कर चुका है वह ऐसा वैचारिक आन्दोलन है जिसमें युवाओं के अलावा हर आयुवर्ग व पेशे से जुड़े लोग सामने आ चुके हैं। बॉलीवुड अभिनेत्री प्रीति जिंटा समेत तमाम कलाकार एक्टिविस्ट सोनम के समर्थन में हैं। युवाओं का प्रदर्शन तो फिर से सिद्ध कर चुका है कि वह सिर्फ दर्शक नहीं रहना चाहते।

लीक पर चलना और अपनी परम्पराओं के साथ आगे बढ़ना अच्छी बात है किन्तु लकीर बनकर किसी बात को स्वीकार लेना तब तक ठीक नहीं है जब न्याय के निकट न हो। जन आन्दोलन भी न्याय को लेकर उपजते हैं और जब युवा सड़क पर उतर आए तो सीधा सा अर्थ है स्थिति गम्भीर है। वर्तमान हालातों में हर बात-बहस-प्रदर्शन को राजनीति की ओट दी जाने लगी है लेकिन सोनम की बात के साथ ही युवाओं का खुलकर सड़कों पर उतरना यह बता रहा है कि देशभर में विचार उबलने लगे हैं। शिक्षा और रोजगार से लेकर भविष्य की चिन्ता में घिरे युवाओं ने जिस प्रकार से दिल्ली की सड़कों पर लाठियां झेली हैं वह साफ-साफ बता रहा है कि राजनेता क्या करते हैं, सत्ता क्या करती है, विपक्ष क्या करता है....इन सब बातों को युवा समझने लगे हैं। वह किसी को सुनने के लिये भीड़ बनना पसन्द नहीं करते हैं। यही सब कारण हैं कि पार्टियों की रैली और चुनावी सभाओं में पैसे देकर दिहाड़ी मजदूर बुलाने की परम्परा चल पड़ी है। युवा समझ चुका है कि कोरे भाषण सुनकर उनका भविष्य चौपट है। इसलिये वह सीधे उस मुद्दे पर आता है जो उसकी जरूरत है। इसके लिये वह प्रयास करता है, सम्वाद करता है, रास्ते तलाशता है और प्रदर्शन तक करने लगता है। इसी का परिणाम केन्द्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे के रूप में दिखाई दिया। वर्तमान की सच्चाईयों को समझना जरूरी है। देश-दुनिया बदल रही है, अब इसका अभ्यास जरूरी है।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

सिक्के से विवादित नक्शा हटाएगा नेपाल

काठमाण्डू। नेपाल सरकार ने नए डिजाइन वाले सिक्के ढालने को मंजूरी दी है। इसके तहत एक रुपये के सिक्के से देश का वह विवादित नक्शा हटा दिया जाएगा जिसमें लिम्पियाधुरा, लिपुलेख और कालापानी शामिल थे। भारत के इन इलाकों को नेपाल ने अपना बताया है।

बंगाल में बांग्ला में होंगे सरकारी कामकाज

कोलकाता। पश्चिम बंगाल सरकार ने एक सितम्बर से राज्य के सभी सरकारी कामकाज में बांग्ला भाषा को अनिवार्य उपयोग करने का फैसला किया है। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने विधानसभा में इसकी घोषणा करते हुए कहा कि अब केन्द्र सरकार के साथ होने वाला पत्राचार अंग्रेजी के बजाय बांग्ला और हिन्दी में किया जायेगा।

नूरिस्तान में भीषण बाढ़ से तबाही

काबुल। अफगानिस्तान के नूरिस्तान प्रान्त स्थित पारून शहर में आई भीषण बाढ़ से 20 लोगों की मौत हो गई और सौ लोग घायल हो गये। तालिबान अधिकारियों के एक बयान का हवाला देते हुए अफगान प्रेस ने बाढ़ से तबाही की सूचना दी। विशेष टीमें आपदा प्रभावित इलाकों का आंकलन कर रही हैं।

न्यूयॉर्क नहीं कर सकता नेतन्याहू गिरफ्तारी

न्यूयॉर्क। अमेरिकी शहर न्यूयॉर्क के भारतवंशी मेयर जोहरान ममदानी ने कहा कि दुनिया की सर्वोच्च युद्ध अपराध अदालत द्वारा इस्राइली पीएम बेंजमिन नेतन्याहू के विरुद्ध जारी गिरफ्तारी वारंट को न्यूयॉर्क शहर लागू नहीं कर सकता, लेकिन उन्होंने संघीय सरकार से ऐसा करने का आग्रह किया।

राम मंदिर धार्मिक व्यवस्था देखेंगे सन्त

अयोध्या। राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की मणिरामदास की छावनी में हुई बैठक में मन्दिर व्यवस्था व धार्मिक आयोजनों को लेकर बड़े निर्णय लिये गये। चढ़ावा चोरी प्रकरण के बाद इस बैठक में तय हुआ धार्मिक व्यवस्था सन्त देखेंगे। इसके संचालन के लिये नौ सदस्यीय कमेटी का गठन किया गया।

सऊदी से परमाणु समझौते को मंजूरी

वाशिंगटन। ट्रम्प ने सऊदी अरब के साथ एक समझौते को मंजूरी दी है। इस समझौते से सऊदी अरब को अपने नागरिक परमाणु कार्यक्रम के लिये यूरेनियम संबर्धन की क्षमता मिल सकती है।

फसक

दाज्यू, मरामार-कटाकाट हो रही ठैरी

राजनीति में घ्वेड़ी-घ्वेड़ी के भी फन उठा रहे हैं बल

दाज्यू, मौसम की तरावट कौन पूछ रहा है, मरामार-कटाकाट हो रही ठैरी। दिल्ली में युवाओं का शक्ति प्रदर्शन पूरी दुनिया ने देख लिया है। हमारे शहर में भी बब्बू दा ने प्रदर्शन किया। दाज्यू, राजनीति में घ्वेड़ी-घ्वेड़ी के भी फन उठा रहे हैं बल। सत्तार बाबू और धार वाला साहब कह रहे हैं- 'लगे हाथ सबको निपटा देंगे।'

दाज्यू, हमें रानी बिजामती की याद आ रही है, वह अपने राज्य में दूरबीन लगाकर चौकन्नी रहती थी। छोटी-बड़ी कई दूरबीन कई मीलों तक देखने के लिये पर्याप्त थी और दो-तीन गोले उसने लम्बी मारक क्षमता वाले रखे थे लेकिन उसे पता नहीं था कि ये गोले कमीशनखोर हैं जो दिखते तो तरोताजा हैं लेकिन अन्दर से फुस्स हैं। इसके बाद रानी ने अपनी प्रजा को दुखी करना शुरू कर दिया, भोले-भाले लोगों का खून चूसने के लिये खटमल का आयात-निर्यात होने लगा, मच्छरों को पनपाया गया। दाज्यू, आप जानने ही वाले हुए जब मच्छर और खटमल मौज करेंगे तो घ्वेड़ा-घ्वेड़ होगी ही। इसके बाद रानी अकेले रह गई और दीवारों में सर पटक-पटक कर रोने लगी। इस बीज रानी को कई बीमारियों ने घेर लिया जबकि मच्छर और खटमल खून चूसकर मोटे हो चुके थे।

दाज्यू, रानी बिजामती का भी क्या दोष? पूर्व जन्मों का कोई कर्ज उसने भी चुकाना होगा। हमें तो अपने मोहल्ले की चिन्ता हो रही है जहाँ इन दिनों पानी भरा हुआ है। कहना तो किसी को कुछ भी नहीं है क्योंकि घोर कलजुग चल रहा है। देख नहीं रहे हो, बागेश्वर में प्रधानाचार्य को क्लर्क ने चाकू घोंपकर मार डाला। पता नहीं कब किसको कौन सी सनक हो जाए। अल्मोड़ा के युवक ने शादी का झांसा देकर युवती को घेर लिया। बाद में कोतवाली जाकर इनका समझौता किया गया बल। उधर तकनीकी विश्वविद्यालय का पेपल लीक होने पर कालेज का घण्टा बज गया बल। पेपर लीक के आरोपी सहायक प्रोफेसर को अगले सात वर्षों के लिए विश्वविद्यालय के सभी परीक्षा कार्यों से प्रतिबन्धित कर दिया। साथ ही उनकी गिरफ्तारी हो गई। दाज्यू, मौलेखाल के बांगीधार इण्टर कालेज में भूगोल के प्रवक्ता के खिलाफ हंगामा हो गया। उनपर आरोप लगा कि कक्षा12 के 5 छात्रों के बाल कैंची से काट दिये और ब्लेड से ड्रेस फाड़ दी। देहरादून के प्रेमनगर स्थित एक निजी स्कूल के प्रिंसिपल ने नाबालिक बालक के साथ अश्लील हरकत कर दी जिसके बाद वह पुलिस के घेरे में हैं। दाज्यू, तराई-भाबर की कहो मत, सितारगंज में डीजे के मात्र 700 रुपये के बकाया भुगतान को लेकर हुए विवाद में एक पर चाकू से जानलेवा हमला हो गया। नानकमत्ता में एक व्यक्ति को विदेश में नौकरी के नाम पर 5 लाख से ज्यादा ठग लिये बल। जिसको जो मिल रहा, वह उसी को घ्वेड़ (घसीट)रहा है।

दाज्यू, क्या जो कहें क्या न कहें। चकराता वन प्रभाग के उप प्रभागीय वनाधिकारी पर आरोप लगा है कि तलाक के फर्जी दस्तावेज दिखाकर दूसरी शादी कर ली। पीड़िता के कहने पर पुलिस ने पकड़ की है और कानूनी कार्यवाही जारी है। सीबीआई ने पशुपालन एवं डेयरी विभाग का अधिकारी बनकर लोन स्वीकृत कराने के एवज में 45 हजार रुपये रिश्वत लेने वाले जालसाज को दबोच लिया है। विकासनगर के कल्याण पुरी में चकराता निवासी कमलेश ने उत्तरकाशी निवासी महिला को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। बागेश्वर के गोगिनापानी क्षेत्र में शराब पीने के बाद दोस्तों में झगड़ा हुआ और एक की मौत। दाज्यू, इसी बागेश्वर में उरेडा के जेआईआर प्लाटों में परियोजना अधिकारी को रिश्वत मामले में विजिलेंस ने पकड़ लिया। हल्द्वानी के तिकोनिया स्थित स्पा सेन्टर में देह व्यापार मामले में फरार चल रहे मुख्य आरोपी की भी पकड़ हो गई है बल। शेष ठीक ही हैं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

राजनीति की हल.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

मंत्री नरेन्द्र मोदी के उस फैसले का स्वागत किया जिसमें पेपर लीक जैसे मामलों की त्वरित सुनवाई के लिये फास्ट ट्रैक कोर्ट स्थापित करने की बात कही गई है। उन्होंने इसे देश के लाखों युवाओं के भविष्य और उनकी मेहनत की रक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण और दूरदर्शी कदम बताया। कहा फास्ट ट्रैक कोर्ट बनने से पेपर लीक के मामलों का तेजी से निपटारा होगा। दोषियों को समय पर और कड़ी मिलेगी। भविष्य में ऐसे अपराधों पर प्रभावी रोक लग सकेगी।

देश व्यापी प्रदर्शन में जिस प्रकार की उठापटक चल रही है उस उर चिन्ता और चिन्तन होना स्वाभाविक है। साथ ही देश व प्रदेश की राजनीतिक चालबाजियों को भी समझना जरूरी है। उत्तराखण्ड में आगामी विधानसभा चुनाव देखते हुए हर मुद्दे पर स्थानीय नेता बाजी मारने को तैयार दिख रहे हैं। स्थानीय मुद्दे हों या देश के बड़े मामले, सभी में नगर मोहल्ले के नेता भी अपने विचार बयान को लेकर उत्सुक हैं जिससे लग रहा है कि सावन की यह हलचल चुनावों के लिये मसाले का काम करेगा।

इन दिनों में पेपर लीक समेत युवा हितों की बात करते हुए प्रदेश के सभी जिलों में विपक्ष और संगठनों ने प्रदर्शन करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे की मांग उठाई। युवा संगठनों ने मांग को लेकर सरकार का पुतला दहन भी किया। उत्तराखण्ड महिला मंच की संयोजक कमला पन्त, उत्तराखण्ड परिवर्तन पार्टी के संयोजक पी.सी.तिवारी, उत्तराखण्ड लोक वाहिनी के अध्यक्ष राजीवलोचन साह, उपपा के अध्यक्ष प्रभात ध्यानी, पत्रकार चारु तिवारी, उत्तराखण्ड इंसानियत मंच के नन्दनन्दन पाण्डे ने दिल्ली की घटनाओं पर चिन्ता करते हुए कहा कि लोकतांत्रिक तरीके से अपनी मांगों के लिये संघर्ष कर रहे युवाओं के साथ केन्द्र द्वारा बर्बरतापूर्ण व्यवहार निन्दनीय है। 1975 से पूर्व लगाए गए आपातकाल जैसी स्थितियों की याद दिलाता है। उन्होंने राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू से अपील की कि देशभर में लोकतन्त्र को बचाने के लिये तत्काल आवश्यक कदम उठाएं। वीडियो जारी कर उन्होंने कहा कि हम लोग जनता के सतत और सुदीर्घ संघर्ष से प्राप्त उत्तराखण्ड राज्य की बर्बादी से भी अत्यन्त चिन्तित हैं। उन्होंने सभी क्षेत्रीय राजनीतिक दलों, जन संगठनों और सम्वेदनशील बुद्धिजीवियों से अपील की है कि इस हिमालयी प्रदेश को बचाने के लिये एकजुट होकर संघर्ष करें।

आन्दोलनों के रूप में गुस्सा उतार रहे छात्रों का प्रदेश में जगह-जगह प्रदर्शन देखने को मिल रहा है। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे के बाद भी प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच तीखी झड़पें हुई। नैनीताल में हाईकोर्ट के कई अधिवक्ताओं ने सभा कर दिल्ली में प्रदर्शन में शामिल युवाओं के ऊपर दिल्ली पुलिस द्वारा की गई बर्बरता के विरोध में बैठक कर रोष जताया। केन्द्रीय मंत्री के इस्तीफे के बाद आन्दोलन की रणनीति ढीली नहीं दिखाई दे रही है और प्रदर्शनकारी ऐलान कर चुके हैं कि शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार तक आन्दोलन जारी रहेगा। उत्तराखण्ड में पेपर लीक मामले में दोषियों को कठोर सजा की मांग करते हुए तकनीकी शिक्षा मंत्री का पुतला फूंका गया। कुल जमा अब यह दिखाई दे रहा है कि प्रदेश के चुनाव के अलावा देश में राजनीति की घमासान के लिये बिगुल बज चुका है और युवा अपने तरीके से सोच रहे हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

संस्मरण

तीतर पक्षी की ध्वनि 'तीन तोला तितरक'

जगदीश सिंह बृजवाल

तीतर पक्षी- जिसे भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार शुभ-अशुभ दोनों पक्ष से देखा गया है परन्तु इस अध्याय के प्रसंग में अनुप्रास अलंकार से अलंकृत- 'तीन तोला तितरक' के शब्द आवृत्ति ने आज दिल की गहराई तक जो टीस पहुँचाया, उसे ..हम कैसे अशुभ होने की संज्ञा दें? जिसकी मीठे अलंकृत ध्वनि के शब्द वाणी ने अतीत के स्मृतियों को पुन: स्मरण कराया है।

आज के परिवर्तन दौर में मानव ने कितनी भी सुख-समृद्धि बटोर लिया हो, चाहे कितनी भी भौतिवादी जीवन में संसाधनों को एकत्रित किया है किन्तु अतीत के मानव पूर्वजों द्वारा कठिनाई, संघर्ष, अभाव-ही-अभाव का जीवन व्यतीत किया था। प्रकृति के साथ गहरे रिश्ते स्थापित करते विकास रूपी गाड़ी खींचते रहने का प्रतिफल आधुनिक मानव प्राप्त कर रहा है।

पहाड़ में रहने वाले लोगों का जीवन भी पहाड़ सा ही दिखता है। गगनचुम्बी हिमालय, ऊँची-ऊँची पर्वत श्रृंखलाएं, गहरी खाई, नदी घाटी, पत्थर-पथरीली भूमि, घने जंगल, उबड़-खाबड़ दुर्गम रास्ते, विकट भौगोलिक स्थिति-परिस्थिति का सामना हर रोज करना पड़ता है। मेहनतकश लोग, दैनिक जीवन चर्या- खेतीबाड़ी, पशुपालन, प्रकृति प्रदत्त उत्पादित उत्पादों पर भी जीवन निर्भरता थी। मौसम के अनुसार हर कार्य सम्पन्नता तथा उत्सव भी मनाते थे। यहाँ के निवासी पूर्व में आत्मनिर्भरता का जीवन ही जीते आए थे किन्तु धीरे-धीरे मानव विकास यात्रा मशीनीकरण ने लोगों के जीवन में जो परिवर्तन लाया उससे लोग आलसी, अकर्मण्य शारीरिक तथा मानसिक रूप से कमजोर होते गए। शारीरिक क्षमता का ह्रास होता गया।

विषय उल्लेखित 'तीतर' पक्षी द्वारा अपने अलंकृत वाणी की ध्वनि को हवा विखेरना, अतीत की विस्मृति को पुन: जाग्रत कर देती है- 'तीन तोला तितरक' की ध्वनि आज भी लोगों को उन खेत खलिहानों की याद दिला देती है जिन खेतों में मेहनतकश लोगों द्वारा जीवन संघर्ष की कहानी गढ़ी गई थी। लेखक अपने नियत स्थान पर खड़े होकर सोचने को बाध्य हो जाता है।

कालेज मार्ग पर स्कूल जाते समय जब इन ढलानदार सीढ़ीनुमा खेत जो नदी किनारे तक फैला है नजर पड़ते ही सभी मित्रमण्डली टापू पर जाकर बैठ जाते थे। खेत में लोगों का कीचड़ से बना शरीर, मेहनत करते बैलों की जोड़ी, बच्चे, युवा, प्रौढ़, बुजर्ग सभी अपने कार्य करते मदमस्त हो रहें हैं धान रोपते महिलाएं पंक्तिबद्ध होकर लोकगीत की धुन में गीत गाते आनन्दित हो रही हैं ओने-कौने में लोग अपने-अपने कार्य करते प्रफुल्लित लग रहे हैं। सभी मित्रों का मन कह रहा था, काश! हम भी इन्हीं लोगों के साथ सम्मिलित हो जाते तो....?

खेत के इनारे-किनारे झुरमुटों से तीतर भी अपनी वाणी से 'तीन तोला तितरक' के संगीत की धुन प्रवाहित कर मानो, कह रहा है हम भी आपके साथ हैं। माहौल अजब-गजब का-सा था।

कालेज की देरी याद आते सभी मित्र झट से उठकर चलते बने, थोड़ी देर बाद खेतों का सब नज़ारा आँखों से ओझल गया परन्तु घर आते-आते भी अभी लोग रोपाई लगाते कहीं कहीं नजर आते रहे। कमी रह गई थी तो वह आनन्दित शोरगुल तथा लोकगीत की धुन न सुनाई देना था कुछ कार्य समाप्ति के बाद घर चले गए थे। कुछ समाप्ति की ओर बढ़ रहे थे।

समय बीतता गया परिवर्तन ने लोगों के रहन-सहन संस्कृति सभ्यता सब कुछ बदल डाली। आवागमन का सुलभ साधन, देश में भरपूर खाद्यान्न उत्पादन ने पहाड़ के खेतीबाड़ी को अत्यधिक प्रभावित तो किया परन्तु लोगों को पूर्णरूपेण मैदान आश्रित भी बना दिया। पहाड़ के लोगों का जीवन अब मैदान से आने वाले खाद्यान पर ही निर्भर है। पहाड़ में अब खेतीबाड़ी नहीं के बराबर रह गई है।

जिस रास्ते से हम सुबह-शाम गुजरते थे। उस रास्ते का तो आज पता भी नहीं है। जिन खेतों में धान की बालियां लहलहाते थे आज उतीस पेड़ के जंगल ने कब्जा कर लिया है। कोई सपने में भी नहीं सोच सकता है की कभी इन जंगलों के बीच किसान, किसानी करते मदमस्त होकर अपने कार्य को अंजाम देते थे। आज जहाँ कहीं थोड़ी बहुत खाली जगह दिखती भी है तो वहाँ बेतरतीब घांस-फूस उग आई है।

आज इस विरान में कोई अपनी परम्परा का निर्वहन करते दिख रहा है तो वह है तीतर तथा उसकी ध्वनि, उसकी चोंच से निकली ध्वनि कर्णपटल पर टकराती है तीतर पक्षी- 'तीन तोला तितरक' करते हुए प्रेम, निष्ठा से अपनों को ढूंढ रहा है। बता रहा है कि हे! मोकापरस्त मानव! आज भी हम जिन्दा हैं- मरे नहीं, ... हम तीतर ... और हमारी वहीं कर्कषता भरी वाणी।

ज्योतिष की बातें 292

5 अगस्त 2026 को बुध स्वराशि मिथुन से निकलकर शत्रुराशि कर्क में प्रवेश करेगा । वहाँ पर शुभग्रह गुरु से युति भी होगी फिर भी बुध निर्बल रहेगा। बुध बुद्धि, वाणिज्य, व्यापार, मामा, लेखन कला, गणित, लेखा, त्वचा, त्रिदोष प्रकृति आदि का कारक होता है। मन्त्रेश्वरकृत फलदीपिका के अनुसार बुध के लिए चन्द्रमा से दूसरा, चौथा, छठवाँ, आठवाँ, दसवाँ और ग्यारहवाँ स्थान शुभ होता है। अत: अगले 18 दिन बुध अपने कारक विषयों में मिथुन, मेष, कुम्भ, धनु, तुला व कन्या राशि के जातकों को अल्पमात्रा में शुभफल प्रदान करेगा। अन्य जातकों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

यहाँ पर ग्रह विशेष का स्वतन्त्र रूप से गोचरुल प्रस्तुत किया जाता है। यह गोचरफल स्थूलरूप से ही सही होता है लेकिन एक अनुमान अवश्य लग जाता है। व्यक्तिविशेष के सूक्ष्म फलित के लिए उसकी जन्मकुण्डली, महादशा आदि का भी विचार करना आवश्यक होता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार 275

नागरिकता प्रमाण पत्र की संकल्पना

लगभग 60 वर्ष पहले जब राशन कार्ड बनना शुरू हुए थे तो उसको बनवाकर ही लोग खुश हो जाते थे। फिर 1993 में फोटोयुक्त वोटर कार्ड बनना प्रारम्भ हुए, उसको बनवाकर तो लोग बहुत प्रसन्न होने लगे क्योंकि वह सभी जगह काम आता था। अब स्थिति बदल गयी है। राशन कार्ड किसी काम का नहीं रहा। वोटर कार्ड केवल वोट देने का ही अधिकार दिलाता है, नागरिकता प्रमाणित नहीं करता। हाईस्कूल का प्रमाण पत्र केवल जन्मतिथि को ही प्रमाणित करता है। पेन कार्ड से न तो निवास प्रमाणित होता है और न ही नागरिकता। आधार कार्ड भी नागरिकता प्रमाणित नहीं करता केवल पहचान बताता है। पासपोर्ट भी नागरिकता प्रमाणित नहीं करता बल्कि केवल विदेश जाने की अनुमति प्रदान करता है।

अब देश में नागरिकता प्रमाण पत्र की बात चल रही है। कल्पना यह है कि जो यह नागरिता प्रमाण पत्र नहीं बनवा पाएंगे उनको घुसपैठिए अर्थात् अपराधी, आतंकवादी माना जाएगा। मेरे विचार से ऐसा सोचना ठीक नहीं है क्योंकि जो भारत के नागरिक हैं उनमें भी बहुत से अपराधी व आतंकवादी पाए जाते हैं और भारत के बाहर रहने वाले भी लोग देशभक्त होते हैं। जो लोग नागरिकता प्रमाण पत्र प्राप्त कर लेंगे वे लोग भी अपराध और आतंकवाद कर सकते हैं और जो कारणवश नागरिकता प्रमाण पत्र प्राप्त नहीं कर पाएंगे उनमें भी लोग देशभक्त हो सकते हैं। अर्थात् नागरिकता प्रमाण पत्र का सम्बन्ध देशभक्ति, अपराध और आतंकवाद से किसी भी प्रकार स्थापित नहीं किया जा सकता।

अत: मेरे विचार से देश की सम्पूर्ण जनता को फिर से आधार कार्ड की तरह नागरिकता प्रमाण पत्र की लाइन में लगाना उचित नहीं होगा। नागरिक प्रमाण पत्र से कौन सा कार्य सिद्ध होगा यह सोचना चाहिये।

-ओंकार नाथ कोष्टा

निशाण ऐतिहासिक ध्वज, उत्तराखण्ड की समृद्ध संस्कृति के प्रतीक

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

पहाड़ों की ठण्डी हवाओं में कभी एक अलग ही गूंज हुआ करती थी। छोलिया नर्तकों की थिरकन, मशकबीन और नगाड़े की थाप और इन सबके आगे शान से लहराता हुआ एक झण्डा, जिसे हमारे बुजुर्ग 'निशाण' कहते थे। आज जब पलायन के सूनेपन ने पहाड़ों को घेरा है, तो सिर्फ लोग ही गाँव से दूर नहीं हुए, बल्कि हमारी समृद्धि लोक संस्कृति के कई अनमोल रंग भी इतिहास के पन्नों में सिमटते जा रहे हैं। इन्हीं में से एक बहुत खास परम्परा है विवाह में 'निशाण' ले जाने की परम्परा। यह परम्परा धीरे-धीरे उत्तराखण्ड के पहाड़ों से खत्म होती जा रही है, क्योंकि पलायन के चलते पहाड़ के गाँव खाली होते जा रहे हैं और ज्यादातर लोग अपने बच्चों की शादी वही करते हैं, जहाँ वे शहरों में बस गए हैं। देहरादून के बुजुर्ग ने जानकारी दी कि उनकी जब शादी हुई थी, जो रस्में पहले होती थी, अब धीरे-धीरे वे खत्म होती जा रही है। उन्हीं में से एक है निशाण की परम्परा। उनकी शादी में निशाण की परम्परा थी। पुराने समय में जब दूल्हा-दुल्हन के घर बारात लेकर जाता था, तब लोग दो तरह के झण्डे लेकर चलते थे, एक लाल रंग का होता था और दूसरा सफेद रंग का होता था। इन्हें स्थानीय भाषा में निशाण कहा जाता था। उन्होंने बताया कि जब लड़का बारात लेकर जाता था, तब आगे सफेद और पीछे लाल निशाण ले जाया जाता था। इसके बाद जब बारात घर लौटती थी, तब लाल निशाण को आगे और सफेद निशाण को पीछे रखा जाता था। पहाड़ में जगह-जगह पर देवी-देवताओं से भावनात्मक रूप से जुड़ाव होता है। उन्होंने बताया बारात से पहले पूजा की जाती थी और देवी-देवताओं से कुशल मंगल तरीके से बारात और दूल्हा-दुल्हन की सुरक्षा के लिए कामना की जाती थी, इसीलिए लोग बोलते थे कि ये निशाण दूल्हा-दुल्हन और बाराती की बुरी शक्तियों से रक्षा करते थे।

पहले माना जाता था जैसे पहाड़ में नदी-नाले और जंगल में रास्ते होते थे जिनसे वे गुजरते थे, वहाँ छल-कपट की सम्भावनाएं बहुत ज्यादा होती हैं। इनसे उनके बचाव में निशाण मददगार होते थे। उत्तराखण्ड के इतिहासकार बद्रीदत्त पाण्डे की किताब 'कुमाऊँ का इतिहास' में इस परम्परा का बड़ा ही रोचक उल्लेख मिलता है। इसमें 700 ईस्वी के समय के चंद राजवंश के संस्थापक राजा सोमचंद के विवाह में पहली बार 'निशाण' के उपयोग का जिक्र दिया गया है। इसका सीधा अर्थ है कि यह परम्परा आज की नहीं, बल्कि 1300 साल से भी ज्यादा पुरानी है। इनमें सफेद और लाल दो झण्डे लिए जाते हैं। इस सफेद झण्डे के पीछे ढाल और तलवार से लैस सैनिकों की एक टुकड़ी होती थी, जिनके साथ तमाम पारम्परिक वाद्य यंत्र बजाते चलते थे और कुछ सैनिक तलवार आदि लेकर नाचते थे। इसी नृत्य को आगे चलकर छोलिया नृत्य के रूप में किया जाने लगा। बारात में लिए गए निशान बहुत पवित्र माने जाते हैं। यही वजह है कि दूल्हा-दुल्हन की ये बुरी शक्तियों से सुरक्षा करते हैं। आज के बदलते परिवेश में कुछ पुरानी रस्में अप्रासंगिक होते हुए भी हम लकीर के फकीर बनकर परम्पराओं की दुहाई देते नहीं थकते। आशय ये नहीं है कि हम अपनी पुरानी परम्पराओं व रस्मों से विद्रोह करें, आवश्यकता इस बात की है कि जो रस्म परिस्थितिवश तब प्रांसगिक और अब अप्रांसगिक हो चुकी है, उनमें समयानुकूल तब्दीली लाएं।

भारतीय वैदिक संस्कृति, सनातन धर्म की अनमोल धरोहर है, इसी संस्कृति की देन है कि विवाह के बाद दम्पत्ति अग्नि को साक्ष्य मानकर सात फेरों में जो बचन दिये जाते हैं, उन्हें ताउम्र निभाने का प्रयास करते हैं। यही कारण है कि हिन्दू समाज में तलाक जैसे मामले बहुत विरल ही मिलते हैं। लेकिन कुछ रस्में जो धार्मिक अनुष्ठान का हिस्सा नहीं हैं और समय व परिस्थितिवश बूढ़ी हो चुकी, ऐसी रस्मों को हम संस्कृति व परम्परा का हिस्सा मानकर ढोते न रहें और यदि वैदिक परम्परा व सनातन संस्कृति पर आस्था रखते हों तो जयमाला जैसी रस्मों को वैवाहिक वैदिक रस्मों के सम्पन्न होने के बाद करें, लेकिन यदि जयमाला वैवाहिक रस्म से पहले ही करना है तो फिर पाणिग्रहण संस्कार जैसी रस्मों का औचित्य ही क्या रह जाता है? उत्तराखंड के पहाड़ों में शादियां सिर्फ एक परिवार का नहीं, बल्कि पूरे गाँव का उत्सव मानी जाती हैं। यहाँ आज भी कई पुरानी परम्पराएं बड़े प्यार और सम्मान के साथ निभाई जाती हैं। ऐसी ही एक खास परंपरा है शादी के घर में चावल, दही और दूध ले जाने की रस्म। जब गाँव में किसी के घर शादी होती है, तो आस-पास के लोग अपने-अपने घरों से थोड़ा-थोड़ा चावल, दही और दूध लेकर शादी वाले घर पहुँचते हैं। यह रस्म लड़की और लड़के, दोनों पक्षों में निभाई जाती है। इस शुभ सगुन माना जाता है और मान्यता है कि इससे नए जोड़े को पूरे समाज का सामूहिक आशीर्वाद मिलता है। पहाड़ों में इस परम्परा के पीछे गहरी धार्मिक और सामाजिक मान्यताएं छिपी हैं। लोग मानते हैं कि चावल माँ लक्ष्मी का रूप होते हैं, जो नए दाम्पत्य जीवन में सुख-समृद्धि और खुशहाली लाते हैं। वहीं दूध और दही को पवित्रता, मिठास और अटूट रिश्तों का प्रतीक माना जाता है। यही कारण है कि शादी जैसे मांगलिक अवसर पर इन चीजों को भेंट के रूप में ले जाया जाता है। यह रस्म दर्शाती है कि पहाड़ी समाज में संसाधनों से ज्यादा भावनाओं और परम्पराओं को महत्व दिया जाता थी आज के समय हमारे समाज मे विवाह के समय ध्वज के उपयोग के पीछे यह सोच किसी की भी नहीं होती कि वे लड़की को जीतने जा रहे हैं या जीतकर आ रहे हैं, पर पुराने जमाने से यह प्रथा चल रही है और अब हमारी संस्कृति का अहम हिस्सा है इसलिए इसे त्यागना हम उचित नहीं समझते न उचित है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सामरिक दृष्टि के मार्गों पर तेजी से कार्य जारी

देहरादून। सीमान्त क्षेत्रों में रोड नेटवर्क को और मजबूत किया जाएगा। लोनिवि के सचिव डॉ.पंकज पाण्डेय ने बताया कि सामरिक दृष्टि से जो भी मार्ग महत्वपूर्ण हैं, वहाँ पर काम किया जा रहा है। इसमें जोशीमठ-मलारी, गूंजी-लिपुलेख तक भी कार्य चल रहा है। उत्तरकाशी से गंगोत्री तक सड़क चौड़ीकरण की योजना है।

भगवती मन्दिर का सौन्दर्यीकरण होगा

बागेश्वर। कपकोट विकासखण्ड के पौराणिक मन्दिरों को नया स्वरूप देने की तैयारी में बदियाकोट के माँ आदि बद्री भगवती मन्दिर का मानसखण्ड मन्दिरमाला परियोजना के तहत 1.15 करोड़ से सौन्दीकरण होगा। इसी प्रकार उडियार का हरुसैम मन्दिर भी नई सजावट में दिखेगा।

सड़क कटान पर जेसीबी सीज

दन्या/अल्मोड़ा। दन्या क्षेत्र के बसाण गाँव में बिना अनुमति के करीब 500 मीटर सड़क कटान मामले में वन विभाग, राजस्व, प्रशासन की संयुक्त टीम ने निरीक्षण कर जेसीबी मशीन सीट कर दी। टीम सड़क निर्माण से हुए नुकसान और प्रभावित वन सम्पदा का आंकलन कर रही है। वन पंचायत सचिव की ओर से सरपंच को कारण बताओ नोटिस भी जारी किया गया है।

कर वसूली पर व्यापारी नाराज

रानीखेत। चिलियानौला नगर पालिका की ओर से कर वसूली को लेकर व्यापारी बेहद नाराज हैं। आरोप है कि बिना पूर्व सूचना और आवश्यक प्रक्रिया पूरी किए कर वसूली हो रही है। व्यापारियों ने संयुक्त मजिस्ट्रेट दीक्षिता जोशी को ज्ञापन सौंपते हुए मामले की निष्पक्ष जाँच की मांग की है।

धारी में जबर्दस्त विरोध प्रदर्शन

नैनीताल। क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं को लेकर धारी ब्लाक में बीडीसी बैठक से पहले कांग्रेस कार्यकर्ताओं समेत ग्रामीणों ने ब्लाक के बाहर जबर्दस्त विरोध प्रदर्शन किया। देवनगर-पलड़ा में बहुप्रतीक्षित भूगड़ा पेयजल लिफ्ट योजना की वास्तविक स्थिति बताने, चाफी से पदमपुरी, धारी तक बदहाल सड़क को ठीक करने, ग्राम सभा गैराखाड़ से लेकर कैलासद्वार तक रोड का पुनर्निर्माण व अन्य मांगों को लेकर एसडीएम को ज्ञापन सौंपा।

परियोजना की नींव

हरिद्वार। सीएम पुष्कर धामी ने हरिद्वार ऋषिकेश गंगा कॉरिडोर योजना के तहत बनने वाले प्रशासनिक मार्ग के निर्माण का भूमिपूजन किया। इसके साथ ही हर की पैड़ी क्षेत्र और रोड़ी बेलवाला की 213 करोड़ रुपये की पुनर्विकास परियोजनाओं का शिलान्यास किया।

परिक्रमा

फचैऽक

ननतिननक बचपन हरै गो, एकलु बानर जा्स बणि गई
वा्लकून पा्लकून मुबाइलन में, चौबीस घंट चिपकी रई
चौबीस घंट चिपकी रई, खेल कूदै उमर में य ला्ग रोग
घरन में सुनसानी है रू, जाणी के है रौ घर में शोक
बहाण औनलाइन पढ़ाईक, मुबाइल तो जियक काव है गो
बीमारी दिनै दिन बढ़ते छू, नानतिननक बचपन हरै गो।

गणेश पाण्डेय

गंगोलीहाट में पर्यटकों की सुविधा के लिये सड़क चौड़ीकरण सहित मांगें

गंगोलीहाट/देहरादून। सेवानिवृत्त केन्द्रीय कर्मचारी संघ के संरक्षक एवं राज्य आन्दोलनकारी गिरीश चन्द्र उप्रेती ने शासन से मांग की है कि गंगोलीहाट में पर्यटकों की सुविधा के लिये सड़क चौड़ीकरण सहित अन्य मांगों को पूरा किया जाए। सड़क परिवहन राज्यमंत्री अजय टम्टा से भी उन्होंने क्षेत्र की समस्याओं को लेकर बात की है। जिस पर सांसद ने आश्वासन दिया है कि जन समस्याओं के लिये आगे रहेंगे। कहा डिग्री कालेज वाली सड़क और पुल बनाने के लिये सांसद निधि से मदद करेंगे।

कर्मचारी नेता श्री उप्रेती ने मुख्यमंत्री से मांग की है कि एनएच 309ए का चौड़ीकरण के टेंडर शीघ्र डलवाए जाएं ताकि पर्यटकों की आवाजाही सुगम हो सके। साथ ही कोठेरा में बहने वाली मानसखण्ड में वर्णित निन्नोत्तरी नदी के झरने को विकसित कर नौकायन की व्यवस्था हो जाए ताकि धार्मिक पर्यटन के साथ रोजगार भी सृजन हो। इसी प्रकार डिग्री कालेज रोड वाया कुंजनपुर को नए भवन तक संयोजित किया जाए ताकि बच्चों की पहुँच सुगम हो, विद्यालय अपने भवन में स्थानान्तरित हो, शहर का विस्तारीकरण हो। महाविद्यालय में विज्ञान और वाणिज्य संकाय के साथ रोजगारपरक कोर्स को भी शुरू करवाया जाए।

उन्होंने कहा कि महाकाली मन्दिर के साथ मानसखण्ड परियोजना में करतेश्वर और मड्केश्वर को भी अनिवार्यत: जोड़ा जाए क्योंकि महाकाली के साथ इनका जुड़ाव है। गंगोलीहाट को बाइपास दिया जाए। सेराघाट-आंवलाघाट, चण्डीकाघाट में शीघ्र पुल निर्माण के टेंडर कराए जाएं। गंगोलीहाट विधानसभा में बन रही चारों पेयजल लिफ्ट योजनाओं की जाँच स्वतंत्र विभाग से कराई जाए औश्र दोषियों को उचित सजा अवश्य मिले। यदि सरकार ऐसा करती है तो सरकार की छवि जनता के बीच बहुत बेहतर बनेगी क्योंकि लोग सच्चाई के साथ न्याय चाहते हैं।

एसआइटी रिकार्ड खंगाल रही है हाईटेक होगी चढ़ावा गणना प्रक्रिया

गोपेश्वर/रुद्रप्रयाग। बदरीनाथ धाम के दान-चढ़ावा चोरी मामले में एसआइटी रिकार्ड खंगालल रही है। दस्तावेजों का खजाने से मिलान के बाद कई अन्य राज खुल सकते हैं। इसके अलावा 32 दिन की गायब सीसीटीवी फुटेज की तलाश है, इससे कई कर्मियों पर गाज गिर सकती है।

बताया जा रहा कि एसआइटी ने बदरी-केदार मन्दिर समिति से भगवान बदरी विशाल के खजाने का तीन साल का रिकार्ड मांगा था। रिकार्ड उपलब्ध कराने के बाद उसका बारीक अध्ययन हो रहा है। 13 दिन की सीसीटीवी फुटेज में 5-5 सौ के नोटों के बण्डल और जेवरात उधर-उधर करते कार्मिकों से भी पूछताछ होगी। मामले में मन्दिर समिति के वैयक्तिक सहायक प्रमोद नौटियाल व सेवानिवृत्त मन्दिर अधिकारी की पहले ही गिरफ्तारी हो चुकी है।

बदरीनाथ धाम में चढ़ावा चोरी प्रकरण के बाद केदारनाथ धाम में भी गणना व्यवस्था को अधिक पारदर्शी एवं सुरक्षित बनाने के लिये कदम उठाए जा रहे हैं। इसके तहत गणना ड्यूटी में तैनात सभी अधिकारी कर्मचारी खाली जेब और बिना मोबाइल के गणना कक्ष में प्रवेश करेंगे। गणना स्थल पर हाईटेक सीसीटीवी कैमने लगाने का प्रस्ताव तैयार किया गया है। हालांकि केदारनाथ में अब तक ऐसी कोई अनियमितता सामने नहीं आई है किन्तु मन्दिर समिति प्रशासन गणना को लेकर किसी प्रकार की ढिलाई नहीं बरतना चाहता है। यहां गणना में लेखाकार आदि कम से कम 5 अधिकारी होते हैं।

इस बीच चढ़ावा प्रकरण पर कोंग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल और बीकेटीसी अध्यक्ष हेमन्त द्विवेदी के बीच जुबानी जंग तेज हो चुकी है। गोदियाल का कहना है कि नैतिकता के आधार पर द्विवेदी को इस्तीफा दे देना चाहिए। सरकार भी उन्हें पद से नहीं हटा रही है। दूसरी ओर द्विवेदी ने गोदियाल पर आरोप लगाया कि बीकेटीसी पद पर रहे उन्होंने मन्दिर समिति के कोष से खूब बन्दरबांट की। अपने विधानसभा क्षेत्र में व्यक्तिगत लोगों को 25 हजार से लेकर 5 लाख रुपये तक की आर्थिक सहायता दी।

बेरीनाग कालेज रोड को लेकर प्रदर्शन

बेरीनाग। नगर में महाविद्यालय और नाग मन्दिर को जोड़ने वाली खस्ताहाल रोड को लेकर व्यापार संघ अध्यक्ष राजेश रावत के नेतृत्व में नागदेव वार्ड के लोगों ने सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया और कहा कि स्थानीय विधायक और जन प्रतिनिधियों द्वारा कोई सुध नहीं ली जा रही है। आए दिन मार्ग में दोपहिया वाहन चालक दुर्घनाग्रस्त हो रहे हैं। कई बार मार्ग को ठीक करने की मांग की जा चुकी है लेकिन सिर्फ कुछ हिस्से में खानापूर्ति के लिये कार्य किया जाता है। इस मार्ग में पैदल चलना भी दूभर हो गया है। स्कूली बच्चों को अत्यधिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि यदि शीघ्र मार्ग को ठीक नहीं किया जाता है तो विधायक आवास, नगरपालिका और लोनिवि कार्यालय का घेराव किया जायेगा। इन मौके पर छात्र नंता आयुष सलौनी, केदार रावत, सचिन डांगी आदि थे।

सोमनाथ मैदान में अग्निवीर भर्ती तैयारी

रानीखेत। कुमाऊँ रेजिमेंट केन्द्र रानीखेत में यूनिट हेडक्वार्टर कोटा के तहत अग्नि वीर भर्ती रैली का आयोजन 17 से 28 अगस्त तक सोमनाथ ग्राउण्ड में किया जाएगा। भर्ती विभिन्न श्रेणियों में निर्धारित तिथियों पर आयोजित होगी। भर्ती कार्यक्रम के अनुसार 17 अगस्त को अग्निवीर जनरल ड्यटी के लिये उत्तराखण्ड के सभी जिलों के रिलेशन अभ्यर्थी शामिल होंगे। 19 अगस्त को उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, बिहार, झारण्खण्ड, छत्तीसगढ़ और पूर्वोत्तर राज्यों के रिलेशन अभ्यर्थियों की भर्ती होगी। 21 अगस्त को ट्रेडसमैन, म्यूजिशियन और क्लर्क पदों के लिए सभी राज्यों के रिलेशन अभ्यर्थी भाग ले सकेंगे। 23 अगस्त को विशिष्ट खिलाड़ी श्रेणी की भर्ती में सभी राज्यों के पात्र खिलाड़ी शामिल होंगे।

वृद्ध जागेश्वर में सुविधा विस्तार होगा

दन्या। धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण वृद्ध जागेश्वर सुविधा विस्तार होने जा रहा है। कुमाऊँ मण्डल विकास निगम इसके लिये तैयारी कर रहा है। 92 लाख रुपये से साकार होने वाली इस योजना से पर्यटन गतिविधियों को गति मिलेगी। साथ ही श्रद्धालुओं को सुविधा के साथ ही स्थानीय युवाओं को नए अवसर मिलेंगे।

गौरीकुंड मार्ग में भूस्खलन खतरा

रुद्रप्रयाग। केदारनाथ हाईवे पर सोनप्रयाग व गौरीकुण्ड के बीच भूस्खलन का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। करीब 6 किमी के दायरे में स्थिति सम्वेदनशील भूस्खलन क्षेत्र की है। यहां पर बार-बार चट्टान गिरने से मार्ग बाधित हो रहा है। यात्रियों की सुरक्षा के लिये प्रशासन ने अलर्ट किया है।

विधायक बेहड़ का सांकेतिक धरना

रुद्रपुर। उधमसिंह नगर विधानसभा क्षेत्र में करीब 5 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले बहुप्रतीक्षित कम्युनिटी हॉल के निर्माण कार्य में देरी को लेकर किच्छा विधायक तिलकराज बेहड़ ने मण्डी परिषद मुख्यालय पहुंचकर सांकेतिक धरना दिया। उन्होंने कहा कि 8 जुलाई को भूमि पूजन होने के बावजूद निर्माण कार्य शुरू नही किया गया है।

394 पुलों का होगा उन्नयन

देहरादून। उत्तराखण्ड में जर्जर हो चुके पुलों या खतरे में आ चुके पुलों के उन्नयन की दिशा में काम हो रहा है। लोक निर्माण विभाग ने वर्ष्ज 2026-3 के मास्टर प्लान में पहली बार पुलों को आपदा-रोधी बनाने की रणनीति तैयार की है। राज्य में कुल 3559 पुल हैं, जिनमें से 345 राष्ट्रीय राजमार्गों और 3214 राज्य सरकार के अधीन हैं। इनमें से 2009 मोटर पुल और 1205 पैदल पुल शामिल हैं।

लोनिवि के चीफ इंजीनियर राजेश शर्मा ने बताया है कि पहले चरण में क्लास-ए लोडिंग मानकों के अनुरूप अपग्रेड किया जाएगा। एडीबी की सहायता से 235 पुलों को आधुनिक मानकों के अनुसार विकसित किया जा रहा है, जिससे उनकी भारत क्षमता और आपदा सहन शीलता दोनों बढ़ेगी। 91 असुरक्षित और 76 पुलों की मरम्मत हो चुकी है।

रानीबाग में चल रही गतिविधियों पर नजर

हल्द्वानी। कथित शनि मन्दिर के निर्माण को लेकर पहाड़ी समाज (कत्यूरी) से जुड़े लोगों ने रोष जताया है। जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपते हुए मन्दिर परिसर से अवैध निर्माण हटाने की मांग कर डाली है। कहा है शिव मन्दिरों में कहीं भी शनि मन्दिर की परम्परा नहीं है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

लच्छू कोठारी.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

कतार में बैठ गये। वृद्ध व्यक्ति ने पैर से जूता निकाला। हाथ में जूता लेकर उन्होंने 'एक' कहते हुए कतार में बैठे पहले भाई के सिर में हल्के से जूते की चोट की तथा उसे वहाँ से चलता कर दिया। फिर उन्होंने 'दो' 'तीन' 'चार' 'पाँच' 'छः' कहते हुए यही प्रक्रिया दोहराई। फिर एक भाई शेष रह गया था। तब उन्होंने 'सात' कहकर उसके सिर में भी जूते की चपत मारी। तब जाकर वह लोग माने कि सातों भाई सही सलामत हैं। केवल छः की गिनती हर बार आने का कारण भी उनको बताया गया कि गिनती करने वाला हर भाई स्वयं को नहीं गिनता था।

एक दिन की बात है, वह सभी भाई दूसरे गाँव में अपने एक रिश्तेदार के यहाँ गये। रास्ता पहाड़ी था तथा जंगल भी पड़ता था। अपने रिश्तेदार को देने के लिये वह अपने खेत से एक बड़ा सा काशीफल भी ले गये थे। रास्ते में जिस भाई के पास काशीफल था, उसका पैर फिसल गया और वह गिर गया। काशीफल हाथ से छूट कर चट्टान के नीचे लुढ़का और धमाके के साथ टूट कर बिखर गया। संयोग से चट्टान के निचले भाग में कोई हिरन आराम कर रहा था। ज्यों ही काशीफल टूट कर बिखरा, हिरन घबरा कर छलांग लगाता हुआ भाग गया। सभी भाईयों ने हिरन को भागते हुए देखा। उन्हें लगा कि हिरन काशीफल के अन्दर से ही निकला था। उन्हें इस बात का बड़ा अफसोस रहा कि उन्होंने पहले ही काशीफल काट कर क्यों नहीं देख लिया। खेत में और भी काशीफल लगे थे। अतः वह सभी तुरन्त लौट कर आये और खेत में जाकर एक-एक काशीफल को चीर कर देखा, पर कोई हिरन न पाकर निराश हो गये।

उनके घर के सामने मिट्टी का एक ऐसा टीला पड़ता था, जिसकी वजह से जाड़ों में उनके आँगन में सुबह धूप नहीं पहुँचती थी। जब सूर्य धुर दक्षिणायन में था, तब उन्होंने यह निश्चित किया कि टीले के उस भाग को नीचे तक काट दिया जाय जिससे कि धूप रुकती है। अतः उन्होंने तीन फीट चौड़ी जगह को पूरा एक माह लगातार नीचे तक काट दिया परन्तु उन्हें आश्चर्य हुआ कि धूप अब भी नहीं पहुँच रही। उन्हें शंका हुई कि गलत स्थान पर कटाई की गई असल में तब तक सूर्य और उत्तरायण की ओर सरक चुका था। उन्होंने उस कटे स्थान पर पुनः मिट्टी भरकर उसके बगल में कटाई प्रारम्भ की, जहाँ पर अब धूप रुक रही थी। तब भी उन्हें सफलता नहीं मिली। सूर्य उत्तरायण की ओर अग्रसर था। इस क्रम में ही पुनः मिट्टी भर दी। जब वह टीला नीचे तक कट गया तब तक सूर्य पूर्ण रूप से उत्तरायण में आ चुका था। अब भयंकर गर्मी पड़ने लगी थी।

उनकी माँ का देहान्त हो गया। उन पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा। ज्यों ही वह मातृ वियोग से उबरे तो माँ की याद में वार्षिक श्राद्ध (बरसी) बड़े धूमधाम से करने की योजना बना डाली। बरसी में माँ के नाम से दान करने के लिये-खाना बनाने व खाने के वर्तन, अनाज, दालें तथा जीवनोपयोगी अन्य वस्तुएं खरीदी गई। पहिनने व ओढ़ने के लिये घाघरा, अंगरखा, रजाई, गद्दा सबकी व्यवस्था की गई। अंगरखा व घाघरा सिवाने का जब असवर आया तो दर्जी को हिदायत दी गई कि ये दोनों चीजें उसकी माँ की नाप के अनुसार ही सिली जानी हैं।

दर्जी ने कहा, 'माँ की नाप कहाँ से लाई जाए, वह तो मर चुकी है?' नाप की समस्या विकट रूप से उनके सामने आ गई। सही नाप कैसे ली जाए? सातों भाइयों ने आपस में सलाह मशवरा किया। अपनी याददाश्त के आधार पर उन्होंने सही नाम खेत में खड़े एक मोटे अखरोट के पेड़ के तने के समतुल्य मान ली।

अतः घाघरा हाथ से पेड़ पर ही सिलवाया गया। जब घाघरा सिलकर तैयार हुआ तो उसे निकालने की समस्या खड़ी हुई। पेड़ की टहनियाँ चारों ओर फैली थी। ऊपर से नहीं निकला जा सकता था। अतः अखरोट का पेड़ जड़ से ही काटने का निश्चय किया गया। बीसियों साल पुराना अखरोट का पेड़ जड़ से ही काट दिया गया तब घाघरा बाहर निकाला गया।

क्रमशः

परम्परा

हरेला उत्तराखण्ड का एक त्यौहार ही नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक पर्व एवं प्रकृति संरक्षण का सन्देशवाहक प्रतीक

रतन सिंह किरमोलिया

हरेला उत्तराखण्ड का एक त्योहार ही नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक पर्व एवं प्रकृति संरक्षण का बहुत बड़ा सन्देशवाहक प्रतीक भी माना जाता है। यह एक बहुत बड़ी मान्यता रही है कि हरेले के दिन विभिन्न पेड़ पौधों की टहनियां भी रोप दी जाएं तो वे कुछ ही समय बाद अंकुरित हो कर बड़े पेड़ पौधे बन जाते हैं। सचमुच बन भी जाते हैं। इसे प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

हरेले के दिन हमारे यहाँ धान मडुवा या अन्य अनाज के खेतों में मेहल की टहनियां रोपे जाने की भी परंपरा है। इसे स्थानीय बोली में 'रैढै' कहा जाता है। यह धन-धान्य, धौ-धिनाली एवं समृद्धि का द्योतक है । हालांकि इसे अब अधिकांश लोग धीरे-धीरे भूलते जा रहे हैं। पलायन कर शहरों में निवास करने वाले लोग तो सचमुच में हमारी गाँवों की बहुत सारी परम्पराओं को भूलते जा रहे हैं। इनमें हमारी बोली भाषा संस्कृति के साथ साथ तीज त्योहार पर्व भी प्रभावित हो रहे हैं।

हरेला त्यौहार के कुछ समय पहले से लेकर कुछ समय बाद तक जगह जगह लोगों और सरकारी/गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम एक अभियान के रूप में चलाया जाता रहा है। विभिन्न अखबारों एवं सोशल मीडिया के माध्यम से आए दिन एतद विषयक समाचार मिलते रहते हैं। वृक्षारोपण के ये कार्यक्रम आजकल ही नहीं बल्कि तीन चार दशक से निरंतर चलते आ रहे हैं। हर बर्ष सैकड़ों पेड़ पौधे रोपे जाते हैं। आजकल तो नोटो खींचना और अखबारों में छपवाना एक नई परंपरा सी बन गई है। जबकि रोपे गए पेड़ पौधों को बचाने के लिए कोई सार्थक प्रयास होते नहीं दीख रहे हैं। न सरकारों की तरफ से, न गाँव समाज और न अन्य सामाजिक संगठनों की तरु से। तब हर बर्ष वृक्षारोपण किए जाने का औचित्य समझ से परे है और यह जन-धन शक्ति एवं समय की बर्बादी के अलावा कुछ नहीं है।

वर्तमान में जंगलों की हकीकत देखी जाए तो वे निरन्तर वृक्षविहीन होते जा रहे हैं। इसके उलट जंगलों में लगने वाली आग जंगलों की जैवविविधता को नष्ट करने में आग में घी डालने का काम कर रही है। और विकास के नाम पर प्रतिबर्ष सैकड़ों पेड़ों की बलि चढ़ जाना सर्वविदित है। इन सभी घटनाओं से प्रतिबर्ष जंगलों का रकबा घटते जाना लाजमी है।

बिना एक भी पौध रोपे बांज का घनघोर जंगल उगाया जा सकता है। इसकी बानगी देखनी हो तो हमारे गांव ककड़धार -अणां(गरुड़) में देखी जा सकती है।

दूसरी ओर जबकि वृक्षारोपण के नाम पर प्रतिबर्ष जो सैकड़ों पेड़ पौधे रोपे जाते हैं। उन्हें बचाने के कोई सार्थक प्रयास नहीं किए जाते। प्रतिबर्ष रोपे जाने वाले पेड़ पौधों को बचाने के लिए कारगर योजना बनाई जानी बहुत आवश्यक है। वन विभाग इसमें असफल होता दीखता है। इसके लिए गाँवों को विश्वास में लेकर काम किया जा सकता है। गांवों में ग्राम पंचायत हैं, वन पंचायत हैं। अन्य स्वयं सेवी संगठन मौजूद हैं। सम्यक नियमित मानदेय के साथ उन्हें जंगलों के संरक्षण एवं संवर्धन का दायित्व सौंपा जा सकता है। वन विभाग कुछ चुनिंदा जिम्मेदार लोगों के साथ मिलकर मॉनिटरिंग का दायित्वनिर्वहन कर सकता है।

दिल्ली-दून एक्सप्रेस्वे पर कांवड़ रोक

नई दिल्ली। कांवड़ यात्रा को लेकर दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने विस्तृत ट्रैफिक एडवाइजरी जारी की है। इस वर्ष दिल्ली दून एक्सप्रेसवे पर कांवड़ियों को निषेध किया गया है। शिवभक्तों की भीड़ और उनकी सुरक्षा का हवाला देते हुए यह तैयारी की गई है।

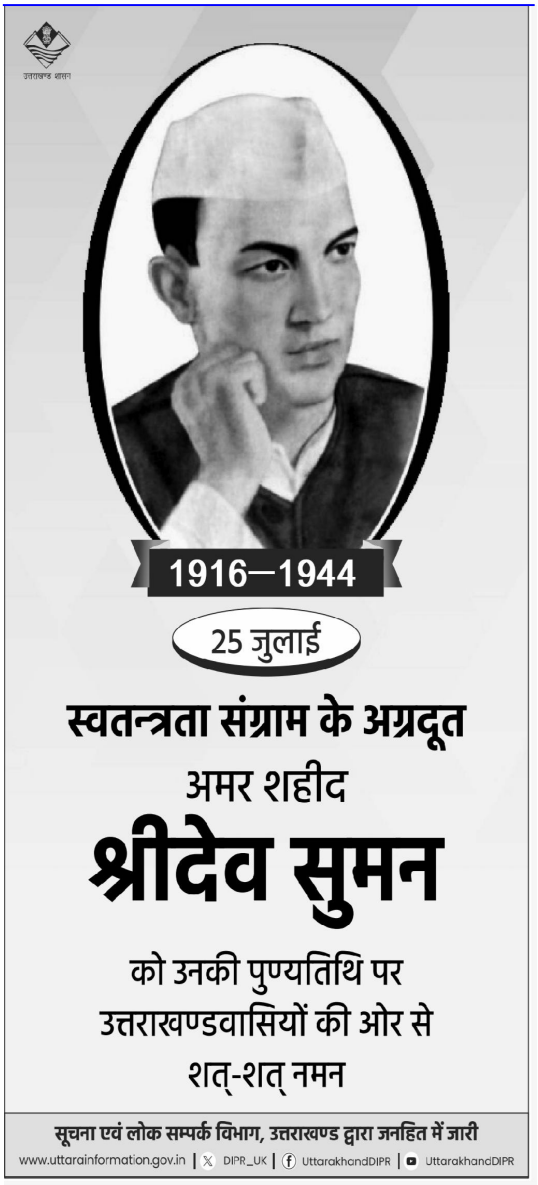

HIMALAYAN
MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

सुरेश मेडिकल स्टोर
नियर- टैक्सी स्टैंड
मदकोट रोड
मुनस्यारी
मो.- 8755116161

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सीटों पर घमासान के लिये सोर में ज्यादा जोर

टिकट मिले न मिले पिथौरागढ़ सीट पर गरजेंगे जरूर

डीडीहाट में बार-बार चौंकाने वाले बयान जारी हो रहे हैं

गंगोलीहाट में मिल-बांटकर रणनीति बना रहे युवा नेता

धारचूला में विधायक धामी से टकराने को भाजपा का ऐलान

आगामी विधानसभा चुनाव के लिये पार्टियों के जाल बिछने शुरू हो चुके हैं। उत्तराखण्ड की सभी विधानसभा सीटों पर घमासान के लिये तैयारी है, जिसमें सर्वाधिक जोर 'सोर' की सीट पर दिखाई दे रहा है। सोर घाटी की पिथौरागढ़ सीट पर कांग्रेस के विधायक मयूख महर जिस प्रकार से दम दिखा चुके हैं और उनके विरोध में नारे लगा चुका दूसरा धड़ा जितना जोर दिखा चुका है, उससे यह तो तय है कि टिकट मिले न मिले इस सीट पर गरजेंगे जरूर। यह इनकी पार्टी को तय करना है कि किसको कैसे मना सकते हैं या टिकट दे सकते हैं। इसी प्रकार भाजपा से टिकट के लिये आतुर नेताओं के बीच खुलेआम रार तो नहीं दिखाई दे रही है परन्तु टिकट न मिलने पर किसका रुख कैसा होगा यह अभी से कहना कठिन है। यूकेडी इस सीट पर बराबर लोगों के बीच सम्पर्क कर काशी सिंह ऐरी को लाने के लिये दम लगा रही है। नेताओं की गर्जना में 'सोर' का सोर बहुत रोमांचक होने जा रहा है।

डीडीहाट विधानसभा सीट में बार-बार चौंकाने वाले बयान जारी हो रहे हैं। ऐसे में हर कोई यह सोचने पर मजबूर है कि आखिर इस बार पार्टियों की रणनीति क्या होने वाली है। 6 बार के विधायक विशन सिंह चुफाल की जड़ जितनी गहरी है, वह इस सीट पर दांव चलेंगे। इसके अलावा भाजपा से टिकट के लिये आतुर नेताओं द्वारा अपना पक्ष रखा जा रहा है। ऐसे में सबको मनाकर एक को टिकट पार्टी के लिये परीक्षा है। कांग्रेस की ओर से भी टिकट के लिये जोर है और माना जा रहा है कि इस बार कांग्रेस डीडीहाट सीट पर कमाल करने के मूड में है। बात गंगोलीहाट सीट की करें तो दम भर रहे युवा नेता मिल-बांटकर रणनीति बनाने लगे हैं। भाजपा में टिकट की लम्बी लाइन को देखते हुए टिकट की मांग कर रहे नेता समझ चुके हैं कि टिकट मिलना बहुत आसान नहीं है। कांग्रेस में भी समझबूझ करने का फार्मूला निकाला जा रहा है।

सीमान्त की धारचूला सीट पर कांग्रेस के विधायक हरीश धामी पूरी तैयारी के साथ जुट गये हैं जबकि भाजपा नेता उनसे टकराने की रणनीति में जुटे हैं। पार्टी नेताओं की ओर से सोशल मीडिया पर बयानबाजियों की बाढ़ में आम जनता यह विचार कर रही है कि उनके हिस्से में कितना विकास आया और आने वाले चुनाव में किस ओर जाएं।

सावन की घटाएं चहुंओर सुख-समृद्धि दें। शुभकामनाओं के साथ-

सी.एस. मर्तोलिया

(रिटा.कमांडेंट)

हिलव्यू काटेज, जोहार नगर

भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

के.आर. सिंह

एडवोकेट

मधुवन इन्क्लेब, गैस गोदाम रोड,

कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी

Hotel

Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चौकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379

APNA GHAR 6396098804

चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

नरेन्द्र सिंह रावत

सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)